International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(2): 93-98

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(2): 93-98
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-01-2025
Accepted: 08-02-2025

शिवानी
शोधच्छात्रादिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सोहन आर्य
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
शिवानी
शोधच्छात्रादिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

पञ्चग्रन्थी व्याकरण एवं पाणिनीय व्याकरण के सन्दर्भ में स्त्री प्रत्यय विमर्श

शिवानी, सोहन आर्य

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i2b.2592

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध प्रबंध में जैन व्याकरण परंपरा के ग्रंथ पांच ग्रंथि व्याकरण एवं पाणिनि व्याकरण के में तुलनात्मक प्रविधि का प्रयोग करते हुए स्त्री प्रत्ययों के विषय में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जैन दर्शन परंपरा नास्तिक अथवा वेद भाग को नहीं स्वीकार करती है अतः वह ङीप्, ङीष्, ङीन् प्रत्ययों के स्थान पर केवल मात्र ङी प्रत्यय का ही विधान करती है । टाप्, डाप्, चाप, प्रत्यय के स्थान पर केवल आङ् प्रत्यय का विधान पंचग्रंथिव्याकरण में दृष्टिगोचर होता है।

पंचग्रंथिव्याकरण में नितांत मौलिकता खोजना अन्याय है। इस व्याकरण में विषयगत स्पष्टता एवं वैदिक भाषा की उपेक्षा के कारण सरलता ही दृष्टिगोचर होती है। साथ ही इस लेख में पूज्यपाद आचार्य देवनन्दी, आचार्य चंद्रगोमि आदि आचार्यों के मत को भी स्त्री प्रत्यय के प्रकरण में स्पष्ट किया गया है।

भारतीय ज्ञानपरम्परा में वेदों का महत्व सर्वजनसमादृत है। कालानुक्रम में वेदों का अध्ययन कठिन होता चला गया। वेदार्थ के क्लिष्ट होने के कारण अध्ययन सौकर्य हेतु षडंगों की रचना हुई। उन वेदांगवाच्य षडंगों में व्याकरण अन्यतम है –

मुखं व्याकरणं स्मृतम् ॥'[1]
प्रधानं च षड्वङ्गेषु व्याकरणम् ।[2]

भारतीय ज्ञान प्रणाली में भाषिक तत्वों के विवेचन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। पदों का विश्लेषण (व्युत्पत्ति) एवं शब्दों के साधुत्व असाधुत्व का अन्वाख्यान ही व्याकरण का प्रमुख कार्य है। वाक्यपदीयकार भर्तृहरि ने भी व्याकरण शास्त्र को "साधुत्वविषया स्मृति:"[3] कहकर संबोधित किया है।

[1] पाणिनीय शिक्षा 1/12
[2] महाभाष्य (पस्पशाह्निक)
[3] वाक्यपदीयम् 1/29

भारतीय ज्ञान प्रणाली में समस्त ज्ञानों का उत्स वेदों को ही माना जाता है। इस अवधारणा के संदर्भ में व्याकरण शास्त्र का उद्भव भी वेदों से ही स्वीकार किया जाता है। भाषिक तत्वों का विवेचन हमें ऋग्वेद में "चत्वारि वाक्परिमिता पदानि"[4], "तां विश्वरूपां पशवो वदन्ति"[5] के रूप में मिलता है। निर्वचन के रूप में व्याकरण का प्रयोग तैत्तिरीय व शतपथ ब्राह्मण में अनेकत्र प्राप्त होता है। निरुक्तकार आचार्य यास्क ने भी नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात एवं क्रिया इत्यादि की जो व्याख्या प्रस्तुत की है वह परवर्ती वैयाकरणों के लिए आधार भूमि का कार्य करती है। 'इस परम्परा में ब्रह्मा को व्याकरण शास्त्र का आदि प्रवक्ता माना जाता है। ऋक्तन्त्रकार ने लिखा है कि व्याकरण शास्त्र का ज्ञान सर्वप्रथम ब्रह्मा ने बृहस्पति को, बृहस्पति ने इन्द्र को, इन्द्र ने भरद्वाज को, भरद्वाज ने ऋषियों को और ऋषियों ने ब्राह्मणो को प्रदान किया था। रामायण काल में भी व्याकरण शास्त्र परम्परा साधुतया विद्यमान थी इसका ज्ञान वाल्मीकि रामायण से प्राप्त होता है-

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।[6]

अर्वाचीन ग्रन्थकार प्रधानतया आठ शाब्दिको का उल्लेख करते हैं। दुर्ग निरुक्तवृत्ति में भी व्याकरण के अष्ट प्रभेदों की चर्चा की गई है। हैमबृहद्वृत्त्यवचूर्णि नामक ग्रन्थ में भी आठ वैयाकरणों की चर्चा नामोल्लेख पुरस्सर प्राप्त होती है-

ब्राह्ममैशानमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम्।
द्वाष्ट्रमापिशलं चेति पाणिनीयमथाष्टमम्॥

आचार्य बोपदेव ने भी कविकल्पद्रुम में आठ वैयाकरणों की चर्चा की है –

इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः।
पाणिन्यमरजैनेन्द्राः जयन्त्यष्टादिशाब्दिकाः ॥[7]

नैषधीय चरित के सर्वप्रथम टीकाकार विद्याधर ने भी अंतिम सर्ग की टीका में श्रीहर्ष के सर्वतोमुखी प्रतिभा का वर्णन करते हुए आठ व्याकरणों के विषय में लिखा है –

अष्टौ व्याकरणानि तर्कनिवह साहित्यसारो नयो॥

आचार्य पाणिनि ने भी अष्टाध्यायी में स्थान स्थान पर १० प्राचीन आचार्यों का नाम उल्लेख करते हुए व्याकरण की एक समृद्ध परम्परा का परिचय दिया है।

जैन-व्याकरण परम्परा में बुध्दिसागर सूरि

अनेक व्याकरणों के रहते हुए भी जैन व्याकरण सम्प्रदाय के उदय के सन्दर्भ में जैन धर्मावलम्बियों का साम्प्रदायिक द्वेष अथवा प्रतियोगिता मात्र नहीं थे अपितु भारतीय समाज की चिन्तन परम्परा की स्वीकार्यता एवं अन्य भाषा शिक्षण की सरलतम विधियों का अन्वेषण एवं जैन विद्वानों की निरन्तर शास्त्र व्यसनिता है। इस तथ्य को इससे भी सिद्ध किया जा सकता है चूंकि हेमचन्द्र इत्यादि अनेक जैन वैयाकरणों ने पाणिनि तथा पतञ्जलि का नाम बहुत ही श्रद्धा से लिया है[8]। जैन व्याकरण के उदय के सन्दर्भ में प्रभावकचरित से ज्ञात होता है कि वैदिक लोग व्याकरण को वेदांग मानते थे एवं अवैदिक जनों द्वारा उसके अध्ययन किए जाने के कारण अहंकारवश ईर्ष्या करते थे।

पाणिनेर्लक्षणं वेदस्याङ्गमित्यत्र च द्विजाः।
अवलेपात् असूयन्ति कोऽर्थस्तैरुन्मनायितैः।।

इन्हीं कुछ परिस्थितिवश जैन व्याकरण का आविर्भाव हुआ। पूज्यपाद देवनन्दी से प्रारम्भ हुई यह परम्परा बुद्धिसागरसूरि द्वारा परिवर्द्धित हुई। जैन व्याकरण निम्नलिखित विशेषताएं सामान्यतया परिलक्षित होती हैं।

लाघव की प्रवृत्ति–

जैन वैयाकरणों ने अनेक स्थलों पर सूत्र रचना में पाणिनि से भी अधिक लाघव प्रदर्शन का प्रयत्न किया। जैन व्याकरण में बहुतायत में एकाक्षरी संज्ञाओं का प्रयोग किया गया है। अनेक जगह जैन वैयाकरणों ने सूत्रों का न्यास इस तरह से किया है कि वे पाणिनीय सूत्र की अपेक्षा छोटे हो गये हैं।

सरलता की प्रवृत्ति-

जैन वैयाकरणों के काल तक जनता पाणिनीय व्याकरण की क्लिष्टता से स्वभावतः त्रस्त हो चुकी होगी। सामान्यतः भी व्याकरण शास्त्र पर कठिनता का आक्षेप बद्धमूल हो चुका था। समाज में प्रचलित कष्टं व्याकरणं शास्त्रम्, मरणान्तो व्याधिः

[4] ऋग्वेद 1/161/15
[5] ऋग्वेद 8/100/11
[6] रामायण किष्किन्धाकाण्ड 2/29
[7] संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि
[8] शेषं निःशेषकर्त्तारम् (हेमचन्द्राचार्य)

व्याकरणम् आदि कहावतें व्याकरण के प्रति सामान्य अरुचि को प्रदर्शित करती हैं। इस कारण पाणिनि की अपेक्षा जैन वैयाकरणों को विशिष्टता प्राप्त करने के लिए अपनी पद्धति को सरल तथा संक्षेप करना ही था। प्रशिक्षु जनता व्याकरण को सरलता पूर्वक सीखना चाहती थी। जैन वैयाकरणों ने व्याकरण- शिक्षण को अपेक्षाकृत सरल बनाने का प्रयत्न करके अपने को जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया।

जैन वातावरण की सृष्टि

जैन व्याकरणों की रचना का मूल उद्देश्य था नये भाषिक समाज में संस्कृत को सरलता से सिखाना। चूँकि अधिकतर जैन वैयाकरण मुनि तथा धर्मोपदेष्टा थे इसलिये उनके व्याकरणों में जैन सिद्धान्तों से सम्बन्धित उदाहरणों का आना स्वाभाविक ही था। कई बार यह कार्य जानबूझ कर किया गया लेकिन अधिकतर यह कार्य स्वभावतः ही हो गया होगा।

बुद्धिसागर सूरि -

श्वेताम्बर जैन बुद्धिसागर सूरि ने जिस व्याकरण की रचना की थी उसका नाम भी बुद्धिसागर अथवा पञ्चग्रन्थी व्याकरण है। बुद्धिसागर का समय १०८० विक्रमी संवत् है। इसकी रचना उन्होंने वैदिकजनों के आक्षेप से क्षुब्ध होकर की थी। यह व्याकरण पूर्णतः पद्यमय है जिसमें काव्यप्रकाश इत्यादि की भाँति सूत्रों में तोड़कर व्याख्या की गयी है। पद्यमयता की दृष्टि से यह पहला व्याकरण ग्रन्थ है। इसमें न केवल सूत्र अपितु खिलपाठ भी पद्य में निबद्ध हैं। ग्रन्थ में २०७ पद्य तथा १९२२ सूत्र हैं जो चार अध्यायों तथा १२ पादों में निबद्ध है। पद्यमय व्याकरण बनाने का प्रयोजन, ग्रन्थकार के अनुसार, लोगों को रुचि पूर्वक इसकी ओर प्रवृत्त करना है -

श्रोतृजनप्रवृत्त्यर्थं सश्लोकं प्रोक्तवानहम् ॥[9]

इसके साथ इसमें ग्रन्थकार ने स्वोपज्ञ व्याख्या भी जोड़ी है। खिलपाठ भी ग्रन्थ के अन्तर्गत ही हैं। पद्यात्मक होने के कारण प्रत्याहारादि कई अन्य सामग्री को सूत्र में न रखकर सूत्रों की व्याख्या के अन्तर्गत ही डाल दी गयी हैं ताकि उन्हें समझने में भ्रम न हो। वे स्वयं कहते हैं-

अचालिताः प्रतीतार्थाः प्रत्याहाराश्चिरन्तनाः।
कृताः पद्या न चामीषामसन्देहार्थं तथा च ते ॥[10]

[9]पञ्चग्रन्थी व्याकरण 1/1/2

बुद्धिसागर सूरि ने पाणिनि, जैनेन्द्र तथा शाकटायन के द्वारा उपयुक्त संज्ञाओं के साथ व्यवहार किया गया है तथापि कई स्थान पर इनमें मौलिकता के दर्शन भी होते हैं।

स्त्री प्रत्यय

आचार्य पाणिनि ने स्त्रियाम्[11] सूत्र से प्रारम्भ कर समर्थानां प्रथमाद्वा[12] सूत्र पर्यन्त विधीयमान प्रत्ययों की स्त्री संज्ञा स्वीकार की है। स्त्रीत्व की विवक्षा में पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीवाची शब्द बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है वे स्त्री प्रत्यय कहलाते हैं। यद्यपि बहुत शब्दों में बिना स्त्री प्रत्यय के भी स्त्रीत्व द्योतित होता है। परन्तु टाप् आदि प्रत्ययों के होने पर स्त्रीत्व का बोध अवश्य ही होता है।

स्त्री प्रत्यय संख्या विमर्श

आचार्य पाणिनि ने अष्टाध्यायी के चतुर्थ अध्याय के प्रथम पाद में स्त्री प्रत्ययों का वर्णन किया है। बुद्धिसागर सूरि प्रोक्त पञ्चग्रन्थी व्याकरण के प्रथम अध्याय के तृतीय पाद के 1.3.5.1 से लेकर पाद की समाप्ति पर्यन्त स्त्री प्रत्ययों का विधान किया गया है। स्त्री प्रत्ययों के सन्दर्भ में यह श्लोक प्राप्त होता है-

टाप्-डाय्-चापस्त्रयोऽप्येते ङीप् ङीष् ङोन्प्रत्ययैः सह।
ऊङ्-तिभ्यां मिलिताश्चापि सन्त्यष्टौ प्रत्ययाः स्त्रियाम् ॥

व्याकरण के प्रमाणभूत आचार्य पाणिनि ने पुल्लिंग से स्त्रीलिङ्ग में परिवर्तन करने के लिए टाप्[13], डाप्[14]", चाप्[15]", ङीप्[16]", ङीष्[17], ङीन्[18], उङ्[19] तथा ति[20]" प्रत्ययों का विधान किया है। बुद्धिसागर सूरि पाणिनीय आठ स्त्रीप्रत्ययों के समक्ष चार (आङ् - अदजादितस्वाङ्। [21], ङी - ङी शोणगौरादितः। [22], ति - यूनस्तिः। [23] एवं ऊङ् - ऊङ् चोदभ्यः। [24]) प्रत्ययों का ही

[10] पञ्चग्रन्थी व्याकरण 1/1/3
[11] अष्टाध्यायी 1/1/3
[12] अष्टाध्यायी 1/1/82
[13] अजाद्यष्टाप् वही/ 4/1/4
[14] डाबुभ्यामन्यतरस्याम्, तदेव 4/1/13
[15] यङश्चाप्, तदेव 4/1/74
[16] ऋन्नेभ्यो ङीप् तदेव 1/1/5
[17] अन्यतो ङीष् तदेव 1/1/10
[18] शार्ङ्गर्वाद्यो ङीन् तदेव 1/1/73
[19] ऊङुतः तदेव 1/1/66
[20] यूनस्तिः तदेव 1/1/77
[21] पञ्च/ व्या/ 1/3/5/3
[22] वही/ 1/3/5/7

विधान करते हैं। पाणिनीय 'टाप्' 'डाप्' 'चाप्' इन तीन प्रत्ययों के समकक्ष सूरि 'आङ्' का ही प्रयोग करते हैं। 'चाप्' में चकार अन्तोदात्त के लिए है, 'टाप्' में टकार चाप् एवं डाप् से पृथक करने के लिए है, डाप् में डकार डित्व सामर्थ्य के लिए है। पञ्चग्रन्थी व्याकरण जैनधर्मावलम्बी होने के कारण वेद को नहीं मानता और स्वर सम्बन्धी नियम वेद में ही दिखाई देते हैं। इसलिए 'डाप्' के डित् का कार्य 'आङ्' में 'ङ्' पढ़कर ही कर दिया है।

पाणिनीय 'ङीप्', 'ङीष्', ङीन्, प्रत्ययों के समकक्ष बुद्धिसागर सूरि ने 'ङी' प्रत्यय का ही विधान किया है। 'ङीप्' में पकार अनुदात्त के लिए पढ़ा गया है।[25] 'ङीन्' में नकार आद्युदात्त के लिए पढ़ा गया है। 'ङीष्' में षकार ङिप् तथा ङीन् से पृथक करने के लिए पढ़ा गया है पञ्चग्रन्थी व्याकरण में वैदिक प्रक्रिया नहीं है अतः स्वर सम्बन्धी नियमों का अभाव होने के कारण बुद्धिसागर सूरि ने 'ङी' प्रत्यय से ही स्त्रीवाचक शब्दों का विधान किया है।

बुद्धिसागर सूरि की इस ऊहा का आधार शाकटायन व्याकरण प्रतीत होता है। शाकटायन ने भी पाणिनीय आठ स्त्री प्रत्ययों के समकक्ष चार (आङ्, उङ्, ङी तथा तित्) प्रत्ययों का ही विधान किया है। चान्द्रव्याकरण में स्त्री प्रत्ययों की संख्या छः ही प्राप्त होती है चाप्, डाप्', 'ङीप्'' ङीष्", उङ्, एवं ति। चन्द्रगोमि ने 'ङीन्' तथा 'टाप्' प्रत्ययों का उल्लेख अपने व्याकरण में नहीं किया है। पूज्यपाद देवनन्दी ने भी संख्या की दृष्टि से तो चन्द्रगोमि का अनुसरण किया है किन्तु प्रत्ययों में कुछ भिन्नता दिखाई पड़ती है। आप्, टाप् डाप्, ङी, ऊ एवं ति। जैनधर्मावलम्बी होने के कारण देवनन्दी ने स्वर सम्बन्धि चिन्ह से युक्त प्रत्ययों का विधान नहीं किया है।

पाणिनीय एवं पञ्चग्रन्थी व्याकरण में उदाहरणों के सम्बन्ध में विषमताएं

प्रकृत सन्दर्भ में निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

1. अष्टाध्यायी में पत्युन्योर्यज्ञसंयोगे[26] सूत्र द्वारा यज्ञ के प्रसङ्ग में ही 'पति' शब्द के इकार के स्थान पर 'न' आदेश एवं 'ङीप्' प्रत्यय के योग से 'पत्नी' शब्द की सिद्धि की गई है। पाणिनि के अनुसार 'पत्नी' शब्द यज्ञ के विषय में ही निष्पन्न होता है।" चन्द्रगोमि ने वह धातु से 'क्त' एवं 'टाप्' प्रत्यय के योग से निष्पन्न (उढ़ा) विधिवत् विवाहित शब्द के अर्थ में 'पत्नी' शब्द को सिद्ध किया है[27]। पूज्यपाद देवनन्दी ने 'पत्नी' शब्द को निपातन से सिद्ध किया है[28]। अभयनन्दी ने इसी सूत्र की वृत्ति में 'पत्नी' को पुरुष की वित्त स्वामिनी कहकर व्याख्या की है। बुद्धिसागर सूरि 'पत्नी' शब्द स्वभार्या अर्थ में 'पति' शब्द के इकार के स्थान पर 'न' आदेश एवं 'ङी' प्रत्यय के योग से सिद्ध किया है[29]। स्वभार्या अर्थ में कहने से कोई शंका अवशेष नहीं रहती अन्यथा 'वृषलस्य पत्नी' यहाँ पर पाणिनि को उपमान के होने पर भी हो जाए यह कहना पड़ा। इस प्रकार बुद्धिसागर सूरि के अर्थ में कुछ सरलता दिखाई पड़ती है।
2. पाणिनि 'सुमङ्गली' शब्द सुमङ्गल शब्द से 'ङीप्' प्रत्यय के योग से वेद तथा संज्ञा विषय में सिद्ध करते हैं।[30] लोक में यदि कोई स्त्री कल्याणकारी है तो उसके लिए 'सुमङ्गला' शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। बुद्धिसागर सूरि पञ्चग्रन्थी व्याकरण पर अपनी स्वोपज्ञवृत्ति में 'सुमङ्गली' एवं 'भिक्षुणी' शब्द संज्ञा अर्थ में ही निपातन से सिद्ध करते हैं।[31]"
3. पाणिनि 'अर्य' एवं 'क्षत्रिय' शब्दों से स्त्रीवाचक शब्द बनाने के लिए 'आनुक्' आगम एवं ' ङीष्' प्रत्यय का विधान विकल्प से करके ' अर्याणी' एवं 'क्षत्रियाणी' शब्दों को सिद्ध करते हैं।[32] जिस पक्ष में 'आनुक्' एवं ' ङीष्' नहीं होगे उस पक्ष में सामान्य ' टाप्' प्रत्यय से 'क्षत्रिया' एवं 'आर्या' शब्द निष्पन्न होते हैं। बुद्धिसागर सूरि ने इन शब्दों को अपनी स्वोपज्ञ वृत्ति में सिद्ध किया है। वहाँ पर पाणिनि के 'आनुक्' आगम के स्थान पर 'कान्' आगम का विधान करते हैं और 'कान्' आगम एवं 'ङी' प्रत्यय के सहयोग से ' अर्याणी' एवं 'क्षत्रियाणी' शब्दों को सिद्ध किया है।[33] पाणिनि ने 'आनुक्' में उकार उच्चारणार्थ या मुख सुखार्थ ही पढ़ा है, अन्य कोई प्रयोजन दृष्टिगोचर नहीं होता है। बुद्धिसागर सूरि 'भवानी' 'मृडानी' 'इन्द्राणी' आदि शब्दों की सिद्धि भी 'कान्' एवं 'ङी' के सहयोग से ही करते हैं।

पञ्च ग्रन्थी व्याकरण में स्त्री प्रत्ययों में स्वीकृत लाघव प्रक्रिया

[23] वही/ 1/3/5/7/17

[24] वही/ 1/3/5/8

[25] अनुदात्तौ सुप्पितौ अष्टाध्यायी 3/1/4

[26] तदेव 1/1/33

[27] पत्युर्न उढायाम् चा/ व्या/ 2/3/30

[28] पत्नी वही 2/3/31

[29] न पत्युः स्वभार्या चेत् पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7

[30] केवलमामकभागधेयपापपरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च। अष्टा/ 4/1/130

[31] सुमङ्गलाद् भिक्षुणी पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/13

[32] अर्यक्षत्रियाभ्यां वा अष्टा/ 4/1/49 (वार्तिक)

[33] कान् क्षत्रियार्यस्य पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/3

कतिपय स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को सिद्ध करने के लिए बुद्धिसागर सूरि ने प्रक्रिया लाघव का प्रयास किया है। पाणिनि 'गार्यायणी' शब्द को सिद्ध करने के लिए 'गार्ग्य' शब्द से 'ष्फ' प्रत्यय का विधान करते हैं[34]। पुनः 'ष्फ' के स्थान पर 'आयन' आदेश (गार्ग्य+आयन) पुनः 'ङी' एवं अकार का लोप" करके 'गाग्र्यायणी' शब्द सिद्ध हुआ। चान्द्रव्याकरण में तो पाणिनि का ही अनुसरण किया गया है। पूज्यपाद देवनन्दी पाणिनीय 'ष्फ' के स्थान पर 'फड्' प्रत्यय का विधान करते हैं।' 'फड्' के स्थान पर 'आयन' एवं 'ङी' प्रत्यय के सहयोग से प्रकृत शब्द रूप को सिद्ध करते हैं। इन सबसे पृथक् हटते हुए बुद्धिसागर सूरि ने फडादि प्रत्ययों का विधान न करके यजन्त प्रातिपदिको से सीधे ही 'आयन' एवं 'ङी' प्रत्यय का विधान करके प्रकृत रूप को सिद्ध किया है[35]। इस प्रकार सूरि 'ष्फ' के स्थान पर 'आयन' आदेश करने वाले एक सूत्र का लाघव अपने व्याकरण में किया है।

2. अष्टाध्यायी में सखी और अशिश्वी शब्द को लौकिक संस्कृत में निपातन से सिद्ध किया गया है[36]।" चान्द्रव्याकरण में भी निपातन से सिद्ध किया गया है। बुद्धिसागर सूरि इन सभी वैयाकरणों से पृथक् अपनी स्वोपज्ञवृत्ति में 'सखी' शब्द को सूत्र से निष्पन्न करते हैं।

अष्टाध्यायी में 'भू' शब्द से नित्य ही वेदविषय में 'ङीष्' का विधान करके 'विभ्वी' रूप सिद्ध किया है[37]।" बुद्धिसागर सूरि ने 'भू' को उकारान्त गुणवाची शब्द मानकर 'विभ्वी' एवं 'विभुः' दो रूप सिद्ध किये हैं[38]। पाणिनि मात्र वेद विषय में ही स्वीकार करते हैं, वही बुद्धिसागर सूरि लोक में इसे स्वीकार करते हैं।

उपसंहार :

निष्कर्षतः कहा जाए तो विभिन्न व्याकरण परम्पराओं में जैन व्याकरण का महत्व सर्वविदित है। जैन व्याकरण परम्परा के परिबृंहण में आचार्य बुद्धिसागर सूरी के पञ्चग्रन्थी व्याकरण का योगदान भी सर्वख्यात है। आचार्य बुद्धिसागर सूरी के अधिकांश सूत्रों में पाणिनीय सूत्रों की उलट फेर ही दृष्टिगोचर होती है। चूंकि जैन व्याकरण परम्परा वेदों की सत्ता को नहीं स्वीकारती है अतः वैदिक संस्कृत का विश्लेषण इस व्याकरण में नहीं किया गया है। वैदिक भाषा की उपेक्षा के कारण पञ्चग्रन्थी व्याकरण में कुछ सरलता दृष्टिगोचर होती है जैसे आचार्य पाणिनि स्त्री प्रत्यय के सन्दर्भ में ङीप्, ङीष् एवं ङीन् प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं वहां पर आचार्य बुद्धि सागर सूरी द्वारा केवल ङी प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। जैन व्याकरणों अथवा पञ्चग्रन्थी व्याकरण में नितान्त नवीनता खोजना अन्याय्य होगा। इन व्याकरणों में विषयगत मौलिकता की अपेक्षा पद्धतिगत स्पष्टता एवं सरलता की खोज अधिक न्यायसङ्गत है और यह अपने आप में बहुत उल्लेखनीय उपलब्धि है जो हमें इन वैयाकरणों में प्रतिपद अनुभूत होती है। वस्तुतः यह जैन विद्वानों का संस्कृत विद्या के प्रति प्रेम और बहुमान ही है जिसके कारण प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक इस प्रकार के नवीन तथा सर्वाङ्गपूर्ण व्याकरण की रचना हुई।

सन्दर्भ

1. पाणिनीय शिक्षा 1/12
2. महाभाष्य (पस्पशाह्निक)
3. वाक्यपदीयम् 1/29
4. ऋग्वेद 1/161/15
5. ऋग्वेद 8/100/11
6. रामायण किष्किन्धाकाण्ड 2/29
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि
8. शेषं निःशेषकर्त्तारम् (हेमचन्द्राचार्य)
9. पञ्चग्रन्थी व्याकरण 1/1/2
10. पञ्चग्रन्थी व्याकरण 1/1/3
11. अष्टाध्यायी 1/1/3
12. अष्टाध्यायी 1/1/82
13. अजाद्यष्टाप् वही/ 4/1/4
14. डाबुभ्यामन्यतरस्याम्, तदेव 4/1/13
15. यङश्चाप्, तदेव 4/1/74
16. ऋन्नेभ्यो ङीप् तदेव 1/1/5
17. अन्यतो ङीष् तदेव 1/1/10
18. शार्ङ्गर्वाद्यो ङीन् तदेव 1/1/73
19. ऊङुतः तदेव 1/1/66
20. यूनस्तिः तदेव 1/1/77
21. पञ्च/ व्या/ 1/3/5/3
22. वही/ 1/3/5/7
23. वही/ 1/3/5/7/17
24. वही/ 1/3/5/8
25. अनुदात्तौ सुप्पितौ अष्टाध्यायी 3/1/4
26. तदेव 1/1/33
27. पत्युर्न उढायाम् चा/ व्या/ 2/3/30

[34] प्राचां ष्फस्तद्धितः, अष्टा/ 4/1/17

[35] यञोऽषावटाद्वायनो। पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/17

[36] सख्यशिश्वीति भाषायाम्। अष्टा/ 4/1/62

[37] भुवश्च अष्टा/ 4/1/17

[38] गुणाद् उतोऽचोऽप्यावरो। पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/2

28. पत्नी वही 2/3/31
29. न पत्युः स्वभार्या चेत् पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7
30. केवलमामकभागधेयपापपरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च। अष्टा/ 4/1/130
31. सुमङ्गलाद् भिक्षुणी पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/13
32. अर्यक्षत्रियाभ्यां वा अष्टा/ 4/1/49 (वार्तिक)
33. कान् क्षत्रियार्यस्य पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/3
34. प्राचां ष्फस्तद्धितः, अष्टा/ 4/1/17
35. यञोऽषावटाद्वायनो। पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/17
36. सख्यशिश्वीति भाषायाम्। अष्टा/ 4/1/62
37. भुवश्च अष्टा/ 4/1/17
38. गुणाद् उतोऽचोऽप्यावरो। पञ्च/ व्या/ 1/3/5/7/2